सं श्रो वि | तृष्[1-87 | 3799. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं दी शाहबाद फारमर्स कोपरेटिव मार्किटिंग-कम-प्रोसेसिंग, सोसाईटी लिं , शाहबाद मारकण्डा, जिला बुद्धेत के श्रमिक श्री मेहर सिंह, पुत्र श्री अर्जुन सिंह मार्फत श्री राजेश्वर नाथ, 2655 टिम्बर मार्किट, अम्बाला छावनी तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भीषोगिक विश्वाद है;

भीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, शब, श्रीबोगिक विवाद श्रीधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा अदान की गर्ड गांक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं० 3(14)84-3-श्रम, दिनांक. 18 श्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त श्रीविन्यम की धारा 7 के श्रीवा गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला को विवादप्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा पामता न्यायित गर एवं रवाट तो। मास में देने हेत् निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच पातो विवादप्रस्त नामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है:—

वया श्री मेहर सिंह की सेत्री सनाप्ति / इटनी न्यायोचित तथा छोन है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं०. म्रो. वि./भिवानी/147-86/3832.--चंकि हरियाणा के राज्याल की राये है कि मैं हरियाणा स्टेट कोपरेटीव सप्लाई एण्ड मार्कीटींग फैड़रेशन लि० वण्डीगढ़ के श्रीमक श्री रघबीर सिंह मार्फत श्री शामसुन्दर गुप्ता, लोहड़ बाजार, भिवानी तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इस के बाद लिखित मामले में कोई श्रीशोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यनाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रीवोगिक विकाद श्रीविनियत, 1947 को धारा 10 को उपवारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हस्याणा के राज्यनाल इसके द्वारा सरकारी श्रीवसूचना सं० 9641-1-श्रम 78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी श्रीवसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवाद प्रस्त या उसके सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तील मारा में देने हेंतु निर्दिष्ट करतें हैं जोकि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बांच था तो विकाद प्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है:-

क्या श्री रवबीर बिंह की सेना सनाध्ति/छाटा न्यामोलित तमा ठीत है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हुनदार है ?

सं०. भी. वि/हिसाए/22-86/3853. -- चूंकि हरियाणा के राज्यसल को राये है कि मैं० (1) परिवहन मायुक्त, हरियाणा, चिकीणढ़, (2) सहा प्रवस्वत, हरियाणा राज्य परिवहन, सिरता के शनित शी मीहन लाल, बैल्डिंग हैल्सर, पुत श्री जगन नाथ गांव व डाक बाना गंगा, तहतील इवनाला, जिला जिला तथा उत्ते प्रवस्त्रका बाव इतने इस है बाद लिखित मामने में कोई भीषोगिन विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायिकणय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अन, श्रौबोगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपवारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीवसूचना सं० 9641-1-श्रम 78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी श्रीवसूचना की घारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादशस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिकणय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो जिन उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादशस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत भ्रथना सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री मोहन लाल की सेवा समाप्ति/छंटनी न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का